3 कोई निराई नहीं

4 कोई छंटाई नहीं

**ज़ीरो बजट नेचुरल फार्मिंग**

ज़ीरो बजट नेचुरल फार्मिंग मूल रूप से महाराष्ट्र के एक किसान सुभाष पालेकर द्वारा विकसित रसायन मुक्त कृषि का एक रूप है। यह विधि कृषि की पारंपरिक भारतीय प्रथाओं पर आधारित है। इस विधि में कृषि लागत जैसे कि उर्वरक कीटनाशक और गहन सिंचाई की कोई आवश्यकता नहीं होती है। चाहे किसी भी फसल का उत्पादन किया जाए उसकी लागत मूल्य ज़ीरो होनी चाहिये।

**ज़ीरो बजट नेचुरल फार्मिंग के घटक**

**बीजामृत-** यह प्रथम चरण होता है जिसमें गाय के गोबर, गोमूत्र तथा चूना व खेत की मृदा से बीज शोधन किया जाता है।

**जीवामृत-** गाय के गोबर, गोमूत्र व अन्य जैविक पदार्थों का एक घोल तैयार कर किण्वन किया जाता है। किण्वन के पश्चात् प्राप्त इस पदार्थ को उर्वरक व कीटनाशक के स्थान पर प्रयोग में लाया जाता है।

**मल्चिंग:** इसमें जुताई के स्थान पर फसल के अवशेषों को भूमि पर आच्छादित कर दिया जाता है।

**वाफसा:** इसमें सिंचाई के स्थान पर मृदा में नमी एवं वायु की उपस्थिति को महत्त्व दिया जाता है।

प्राकृतिक खेती कृषि की प्राचीन पद्धति है। यह भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक कीटनाशक का उपयोग नहीं किया जाता है। इस प्रकार की खेती में जो तत्व प्रकृति में पाए जाते है, उन्हीं को खेती में कीटनाशक के रूप में काम में लिया जाता है। प्राकृतिक खेती में कीटनाशकों के रूप में गोबर की खाद] कम्पोस्ट, जीवाणु खाद] फ़सल अवशेष और प्रकृति में उपलब्ध खनिज जैसे- रॉक फास्फेट, जिप्सम आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिए जाते हैं। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फ़सल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता है।

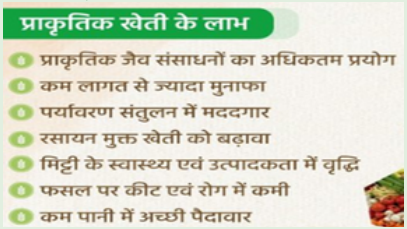

**प्राकृतिक खेती के चार सिद्धांत**

1 कोई उर्वरक नहीं

2 कोई जुताई नहीं

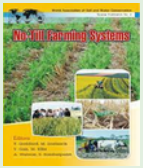




क्रमांक: COOP/2023/KOTA/201080/25/14

# एग्रीकल्चर फ़ोरम फॉर टेक्निकल एजुकेशन ऑफ़ फार्मिंग सोसायटी

**कोटा, राजस्थान**

## प्राकृतिक खेती

**संकलन**

**1. डॉ. दिव्या चौधरी**
कृषि विस्तार और संचार विभाग, सहायक प्रोफेसर,
राजकीय कृषि कॉलेज, बस्सी, चित्तौड़गढ़।

**2. शुभम चौधरी**
एम.एससी. (बागवानी), डॉ. वाई एस परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फॉरेस्ट्री, नौणी, हिमाचल प्रदेश।